बच्चे, कहानियाँ और बातचीत

अलका तिवारी

कथा साहित्य के जरिए नैतिक शिक्षण एक पुरानी परिपाटी रही है। वाचिक परम्परा में *पंचतंत्र, हितोपदेश* और *जातक कथाओं* में इसके संकेत मिलते हैं। लिखित बाल साहित्य में तो इसकी पुरज़ोर वकालत की जाती रही है। यह भी हालिया विमर्श है कि बाल साहित्य को नैतिक शिक्षण का जबरिया, ज़रिया बनाया जाना, साहित्य का पाठक बनने और साहित्य रस बोध की राह में कहीं बाधा तो नहीं। इस मत के समर्थकों का कहना है कि जब बड़ों का साहित्य इस कसौटी में नहीं परखा जाता तो फिर बच्चों के साहित्य में यह आग्रह क्यों? यह तो कहानियों पर विश्लेषणात्मक चर्चा करते हुए बच्चों की समझ बनने की प्रक्रिया में स्वतः निहित है।

प्रस्तुत आलेख में अलका तिवारी ने बच्चों के साथ कहानियों पर बातचीत करते हुए उनकी बारीक़ परतों को खोलने और बच्चों की पाठक प्रतिक्रिया खँगालने की कोशिशों का ब्योरा लिखा है। सं.

कोरोना महामारी के इस दौर में हम सभी का जीवन काफ़ी गहरे से प्रभावित हुआ, बच्चे भी इससे अछूते नहीं रहे। ऐसे समय में बच्चों के बीच सकारात्मक माहौल बना पाने व उन्हें सीखने-सिखाने के अनुभवों से जोड़े रखने के लिए विकल्प खोज पाना एक टीम के तौर पर हम सभी के लिए एक अलग तरह का अनुभव रहा। इसके लिए समुदाय में एक जगह रहने वाले बच्चों का समूह बनाकर काम करने का विचार उभरा। इस प्रक्रिया में बच्चों के अलग-अलग कक्षा स्तर (3-8) व सीखने के स्तर में विविधताओं को साथ लेकर चलने के विचार को समायोजित कर स्वरूप देना अपने-आप में चुनौती भरा रहा। इसके लिए किताबों के ज़रिए काम करना एक हल नज़र आया। इसके ज़रिए सबको शामिल करते हुए, बच्चों में भाषाई कौशलों के आयामों पर कुछ काम कर पाना सम्भव लगा।

कहानियों के बहाने...

बच्चों के साथ काम करते हुए पढ़ना-लिखना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कई तरह की चुनौतियाँ अनुभव का हिस्सा बनती रहती हैं। बतौर एक शिक्षक ये लगता है कि नए रास्ते खोजने में ये चुनौतियाँ हमेशा एक दोस्त की तरह राह खोजने में साथ निभाती हैं। स्वयं के स्तर पर कोशिश के साथ, अन्य साथियों के साथ रही लगातार बातचीत से यह समझ बनाने में मदद मिली कि भाषाई कौशलों को अर्जित



करने में एक समृद्ध माहौल का होना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को एक तरह की सहजता और सार्थकता देता है। इस विचार को ध्यान में रखते हुए बच्चों के साथ लाइब्रेरी की पुस्तकों के ज़रिए काम करने का प्रयास रहा। साथ ही (हिन्दी-अँग्रेज़ी) दोनों भाषाओं के कुछ ऑडियो शामिल किए गए, ताकि विविध रोचक सन्दर्भ बच्चों के अनुभव का हिस्सा बन सकें। बच्चे इन सन्दर्भों के ज़रिए हँसें, गुदगुदाएँ, एक दूसरे को सुनाएँ और दुनिया की ख़ूबसूरती की एक झलक ले पाएँ। साथ ही इन सन्दर्भों में छुपे भावों को अपने भीतर तक महसूस करते हुए अपनी बात को अपने ढंग से दूसरों तक पहुँचा पाएँ। यहाँ अँग्रेज़ी भाषा का उपयोग बच्चों के बीच अँग्रेज़ी भाषा सुनकर समझने का एक मौक़ा बना पाने के मक़सद से किया गया।

टीम के सदस्य के रूप में मुझे भी दो छोटे समूह मिले। पहले समूह में 10 व दूसरे में 5 बच्चे थे। काम शुरू करने से पहले, बच्चों के साथ बातचीत व उनकी राय को शामिल करते हुए एक साझा सहमति बनाई गई ताकि बच्चे भी इस प्रक्रिया को वैसे ही देख पाएँ, जैसा इसे बुना गया है, साथ ही अपनी भूमिका को लेकर भी उनके मन में स्पष्टता रहे। इस प्रक्रिया में बच्चे अपनी पसन्द व स्तर के अनुसार पुस्तकें चुनकर, उन्हें पढ़ने की प्रक्रिया से जुड़ने की कोशिश करते। ज़रूरत होने पर पुस्तकों के चुनाव में सब एक दूसरे को सुझाव देकर मदद भी करते। बच्चों द्वारा अपनी पुस्तक को समूह में साझा करने का प्रयास रहता। कुछ बच्चे प्रश्नों के ज़रिए चर्चा को बढ़ाते तो कुछ अपनी प्रतिक्रियाओं से चर्चा को रोचक बनाते। हम सबने सामूहिक सहमति से तय किया कि हर दिन कुछ पढ़ेंगे, और पढ़ी हुई पुस्तक पर अपने शब्दों में अनुभव लिखने का कार्य करेंगे। काम के दौरान बच्चों के साथ रहे अनुभव में से कुछ अंश साझा करने की कोशिश कर रही हूँ...

नदी और पहाड़ : एक दिन हमने 'नदी और पहाड़' पर आधारित एक ऑडियो की मदद से कहानी सुनी– पहले अँग्रेज़ी में फिर हिन्दी में।फिर इसपर बातचीत की। बच्चों ने नदी और पहाड़ दोनों के पक्षों को ध्यान से सुनने की कोशिश की। समूह में हम सबने एक दूसरे से प्रश्न किए तो अन्य बच्चों ने इसपर अपनी समझ को साझा किया। बातचीत में बच्चों ने चर्चा को एक सार्थक दिशा देने में अपनी-अपनी भूमिका निभाई। बच्चों की प्रतिक्रियाओं के अंश कुछ इस रूप में रहे :

भारती (कक्षा 3) : इसमें नदी और पहाड़ आपस में बातें कर रहे हैं। नदी हर जगह घूमती फिरती है, पहाड़ बस खड़ा रहता है एक ही जगह पर।

बुल्ला : नदी परेशान लग रही थी। वो थकी हुई थी। वो चाहती थी कि पहाड़ उसकी मदद करे।

विकास : नदी पहाड़ से शिकायत कर रहीहै कि तुम तो कितने आराम से रहते हो? मैं भी तुम्हारी तरह रहना चाहती हूँ!

वैदेही : नदी पहाड़ से अपना दुःख साझा करने आई है। शायद इससे उसका मन हल्का हो जाए।

आकाश : नदी को लगता है उसको एकपल का भी आराम नहीं है। उसे हमेशा ही चलते रहना पड़ता है।

विशाल : पहाड़ तो एक जगह खड़े-खड़े बहुत बोर चुका है क्योंकि उसे रोज़ एक जैसी चीज़ें ही देखनी पड़ती हैं। पर नदी तो रोज़ नई-नई जगह जाती है।

मानवी : पहाड़ को नदी का जीवन अच्छा लगता है और नदी को पहाड़ का। पर दोनों के जीने के तरीक़े अलग-अलग हैं। पहाड़ यह समझाने की कोशिश कर रहा है कि नदी हमेशा कितने लोगों की मदद करती है।

कुलदीप : हम सब अलग-अलग हैं, और साथ रहकर हम एक दूसरे की मदद करते हैं।

आकाश : हम सभी को अपनी ज़िन्दगी से कोई-न-कोई शिकायत रहती है।

बुल्ला : ऐसा तो इंसान ही करते हैं। चिड़िया, बादल, पेड़ कभी शिकायत नहीं करते, वे बस अपना काम करते रहते हैं।

आकाश : हाँ, इंसान ही आपस में लड़ते हैं, ख़ुद को बड़ा और दूसरों को छोटा समझते हैं।

विकास : इस प्रकृति में हर किसी की अपनी जगह है, कोई किसी की कमी पूरी नहीं कर सकता। सबका अपना महत्त्व है। कोई बड़ा या छोटा नहीं है, जैसे– यदि फूल नहीं होंगे तो मधुमक्खी शहद कैसे बनाएगी? और मधुमक्खी व दूसरे छोटे कीड़े नहीं होंगे तो फसलें कैसे होंगी? फूल कहाँ से खिलेंगे?

आकाश : इंसानों की बस्ती में लोहार, सब्ज़ीवाला, डॉक्टर, मज़दूर, मास्टर, किसान, जानवर सब होते हैं, तभी तो हम अच्छे-से जी पाते हैं, क्योंकि सब मिलकर ही तो एक दूसरे की ज़रूरत को पूरा करते हैं।

बुल्ला : अगर सबको एक दूसरे की ज़रूरत है तो फिर कोई छोटा या बड़ा कैसे हो सकता है?

मानवी : तो फिर सब लोग ज़रूरी हैं, और सभी काम भी।

मानवी : पहाड़ की बात सुनकर नदी का सोचने का तरीक़ा बदल जाता है।

भारती : अब नदी फिर से अपने काम में जुट गई थी।

कुलदीप : जब हम परेशान हो जाते हैं तो अच्छे दोस्त उस समस्या से बाहर निकलने में हमारी मदद करते हैं।

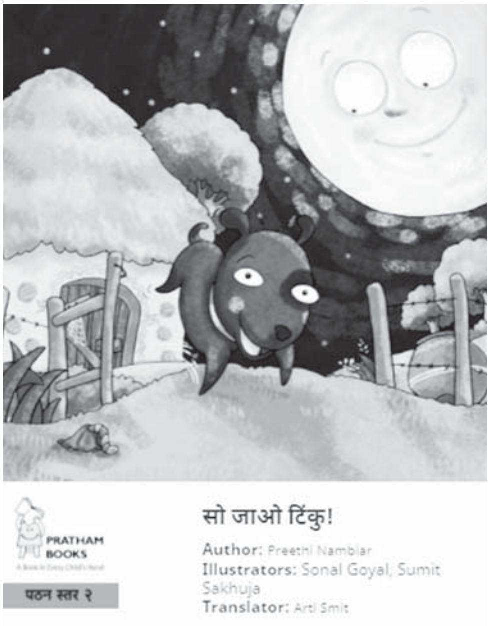
बुल्ला : पहाड़ ने नदी को यह समझने में मदद की कि उसके होने से कितने लोगों का जीवन बदल रहा है। नदी हर रोज़ कितने लोगों की मदद करती है, लेकिन वह ये सब नहीं कर सकता।

चर्चा में समूह का निष्कर्ष कुछ इस रूप में रहा कि जब हम अपने काम के महत्त्व को ठीक से नहीं समझते हैं, तो हम परेशान हो जाते हैं। पर इस ख़ूबसूरत धरती पर सबका होना ज़रूरी है, क्योंकि सबका अपना काम है। अच्छे-से जीने के लिए सबका मिल-जुल कर रहना ज़रूरी है। पेड़-पौधे, तितली, काँटे, नदी सब इंसानों को एक साथ मिलकर रहने की प्रेरणा देते हैं। हम भी एक सुन्दर दुनिया बनाने की कोशिश कर सकते हैं जिसमें सब एक दूसरे के साथ प्यार से रहें। यहाँ कोई छोटा या बड़ा नहीं है, तुलना करना ज़रूरी नहीं है। अगर हम एक दूसरे का महत्त्व समझ पाएँ तो आपस में तुलना के बिना भी जीने का तरीक़ा ढूँढ़ा जा सकता है। इंसानों की बस्ती में लोहार, सब्ज़ीवाला, डॉक्टर, मज़दूर, मास्टर, किसान, जानवर सबके होने से ही तो हम अच्छे-से जी पाते हैं, क्योंकि सब मिलकर ही तो एक दूसरे की ज़रूरतें पूरी करते हैं। अगर सबको एक दूसरे की ज़रूरत है तो फिर कोई छोटा और बड़ा कैसे हो सकता है। अँग्रेज़ी पर रही बातचीत में asked, replied, doing well, comparison, enable, survival आदि शब्दों को हमने छोटे-छोटे वाक्यों में काम में लेते हुए समझने का प्रयास किया। बुल्ला ने पूछा, दीदी ईगो (ego) को कैसे समझा जाए? काफ़ी कोशिश के बाद भी मुझे समझ नहीं आया कि सन्दर्भ के साथ इस शब्द को सही ढंग से कैसे बच्चों तक पहुँचाया जाए। तो मैंने कहा, पता करके बताऊँगी, अभी तो मुझे नहीं पता।

सो जाओ टिंकु : कक्षा 3 की भारती *सो जाओ टिंकु* पुस्तक पढ़ने के बाद अपनी बात कुछ इस तरह बताती है– टिंकु को नींद नी आ रही थी तो वो रात को जंगल में चला गया। चाँद की रोशनी हो रही थी। वहाँ जुगनू, चमगादड़, लोमड़ी, उल्लू, मिले। सब मज़े से ख़ूब खेले।

फिर अपनी बात आगे बढ़ाती हुए बोली– दीदी, आज एक अनुभव भी लिखा है मैं सुनाऊँ। अनुमति मिलने पर वह पढ़कर सुनाने लगी– आज मौसम बहुत अच्छा हो रहा था। मैं मेरी मम्मी से पूछी, मम्मी आज मामा के चल। मम्मी बोली, बाद में बताऊँगी। मैं बहुत ख़ुश थी कि

आज हम जाएँगे। शाम को मैं फिर मम्मी से पूछी, अब तो सारा काम हो गया। अब चलेगी न मम्मी! मम्मी बोली, कहीं नहीं जाएँगे। जा बकरी बाँध। तब मैं बहुत रोई। कक्षा 5 के आकाश ने कहा– इस किताब को पढ़कर लगा कि रात भी तो ख़ूबसूरत हो सकती है। मैंने कल सच में जागकर देखा था– फैली हुई चाँद की रोशनी में सबकुछ कितना अच्छा लगता है। हमारे घर में नेवला अपने पाँचों बच्चों को लेकर घूम रहा था।



बोबक बकरा : ऑडियो के ज़रिए सुनी इस कहानी को अंकिता ने अपने शब्दों में हूबहू सुनाया। कक्षा 6 की अर्चना ने 'बोबक बकरा' कहानी के बारे में अपनी बात कुछ इस तरह साझा की। वह खाने का बड़ा ही शौक़ीन था। जो कुछ भी पाता, तुरन्त उसे मुँह में लपक लेता। कपड़े तक न छोड़ता। वह बग़ीचे में ख़ुश महसूस कर रहा था, घास उसे मखमल से कम आरामदायक नहीं लग रही थी। पहली बार उसने सोचा, आख़िर सब नेता के पीछे क्यों जा रहे हैं? मैं भी तो ऐसे ही जाता हूँ। हर बार मुँह उठाकर पीछे-पीछे चल देने की आदत उसके लिए मुसीबत ही बन गई। उसने अपनी मुसीबत से



सबक़ लिया। तब से वह बदल गया क्योंकि अब वह अपने निर्णय ख़ुद लेने लगा था। तब उसे पता चला कि अब वह पहले से ज़्यादा ख़ुश है। तब से वह सोच-समझ कर काम करने लगा।

याकिती याक : इस पुस्तक को पढ़कर कक्षा 6 की यामिनी ने अपना विचार कुछ इस तरह से साझा किया– एक छोटा, नन्हा, प्यारा-सा याक है। वह जहाँ रहता है वहाँ के पेड़, नदी, चट्टान, फूल, तालाब सब उसके दोस्त बन गए हैं। वह रोज़ वहाँ आता है और ख़ूब सारा समय बिताता है। एक दिन अचानक उसे पता चलता है कि उसे अपने मालिक के साथ शहर छोड़कर कहीं बहुत दूर चले जाना है। अब वह इस बात से दु:खी है कि वह अपने इन दोस्तों को कभी नहीं देख सकेगा, क्योंकि वह एक याक है। याक अकेले इतनी दूर का रास्ता याद नहीं रख सकते, इसलिए फिर कभी भी वह उनसे मिलने नहीं लौट पाएगा। जब वह आख़िरी बार अपने दोस्तों से मिलने आता है तो तालाब को बहुत देर तक देखता रहता है। पेड़ से लिपटे रहना उसे अच्छा लगता है। इस बातचीत के बाद यामिनी अपनी माँ के साथ बिताए समय से एक सुन्दर अनुभव कुछ इस तरह सुनाती है– माँ,

जब तुम्हारी शादी हो रही थी तो मैं बहुत ख़ुश थी। तुम मेरे लिए सुन्दर गहने और कपड़े लाई थीं न। मैं सब पहनकर देख रही थी। पर जब सुबह तुम विदा होकर जाने लगीं तो मैं बहुत रोई थी। नाना मुझे ज़बरदस्ती कमरे में ले आए थे ताकि मुझे तकलीफ़ न हो। मैं बहुत दु:खी थी। पर तुम चली गईं...। जब तुम छोड़कर गई थीं तो मैं 8 वर्ष थी, अब 11 वर्ष की हो गई हूँ। 3 साल हो गए माँ तुम्हें देखे बिना। मैं बस यही सोचती हूँ कि पता नहीं मुझे जाने कितने वर्ष तक ऐसे ही रहना पड़ेगा तुम्हारे बिना। यामिनी के ये शब्द हम सबको माँ के न होने के दुःख को बहुत गहरे से महसूस करने को मजबूर कर देते हैं।

संसार एक पुस्तक है : कक्षा 5 की सपना ने अपनी पुस्तक से पढ़कर इसपर अपना अनुभव समूह में साझा किया। बच्चों के आग्रह पर नेहरूजी द्वारा लिखित यह पत्र जब हमने समूह में पढ़ा तो बच्चों की प्रतिक्रियाएँ कुछ इस तरह आईं– सभी अलग-अलग जगहें इस दुनिया का ही हिस्सा हैं। दुनिया की हर चीज़ अपने बारे में एक कहानी कहती है। उसका पुराना सफ़र कैसा बीता, उसे अपने जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा? नदी के नए पत्थर नुकीले होते हैं और पुराने पत्थर गोल और चिकने होकर सुन्दर हो जाते हैं। इससे पता चलता है कि वे नदी के पानी के साथ हमेशा कितनी लम्बी यात्राएँ करते हैं, रास्तेभर चोट खाते रहते हैं। हर चीज़ हमें कुछ-न-कुछ ज़रूर बताती है। बस ज़रूरत है सब चीज़ों की कहानी को समझना सीख जाएँ। बच्चों ने इस समझ को अपने काम से जोड़ने का भी प्रयास किया। इन दिनों हम भी लगातार कुछ अलग-अलग तरह की चीज़ों के बारे में जानने की कोशिश कर रहे हैं।

अर्चना का मानना था कि पढ़ने-लिखने का काम हमारे अपने लिए है। हम ये सब ख़ुद के सीखने के लिए करते हैं, किसी और के लिए नहीं। अगर हम ये बात समझ जाएँ तो हम और भी आसानी से नई चीज़ों के बारे में सीखते जाएँगे। इस पत्र पर हो रही चर्चा ने कक्षा 6 की अर्चना को बड़ा प्रेरित किया और उसने मैगजीन से एक लेख 'किताबों का महत्त्व' पढ़कर अगले दिन अपने अनुभव से जोड़ते हुए एक प्रश्न के ज़रिए मन में चल रहे विचार को कुछ इस तरह साझा किया– हम कब मानेंगे कि हममें समझदारी आ गई है! अकसर बड़े और पढ़े-लिखे


12 संसार पुस्तक है

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ। तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे-से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतों में बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ।

2019-2020

लोग भी कहते कुछ हैं, करते कुछ और। सब पेड़ों के बारे में बात करते हैं, पर जब हमें ज़रूरत होती है तो हम उन्हें काटने से पीछे नहीं हटते। कभी सोचा है पेड़-पौधे भला कैसा महसूस करते होंगे? हमारे व्यवहार से उन्हें कितनी तकलीफ़ होती होगी? पेड़-पौधे हमें सब देते हैं, बिना कुछ चाहे। चाहे वह छाया, ऑक्सीजन, फल, दवाइयाँ हों या पक्षियों-मकोड़ों को घर और खाना। लेकिन हम मनुष्य ऐसे नहीं हैं।

एनसीईआरटी की *वसंत* भाग 2 से अर्चना ने एक कहानी 'चिड़िया की बच्ची' पढ़ी। इस कहानी ने अर्चना के मन को छुआ और उसने उत्साहित होकर इस कहानी को समूह में साझा किया :

रामदास ने बड़ा महल बनवाया और उसके आगे एक सुन्दर-सा बग़ीचा, ताकि उसका दिल

बहल सके। वह बग़ीचे में तख़्त डालकर बैठता ताकि मन लगा रहे। फिर भी उसे कुछ कमी लग रही थी। तभी एक सुन्दर-सी चिड़िया आई और एक डाल पर बैठ गई। वह चिड़िया बड़ी ही चंचल थी, कभी गर्दन हिलाती तो कभी पूँछ, एक पल को भी टिककर न बैठती। उसकी सुहानी नीली


चिड़िया की बच्ची 9

माधवदास ने अपनी संगमरमर की नयी कोठी बनवाई है। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया है। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है और कोई व्यसन छू नहीं गया है। सुंदर अभिरुचि के आदमी हैं। फूल-पौधे, रकाबियों से हौज़ों में लगे फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत अच्छा लगता है। समय भी उनके पास काफ़ी है। शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का हो जाता है तब कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे वह गलीचे पर बैठते हैं और प्रकृति की छटा निहारते हैं। इनमें मानो उनके मन को तृप्ति मिलती है। मित्र हुए तो उनसे विनोद-चर्चा करते हैं, नहीं तो पास रखे हुए फर्शी हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयाल ही खयाल में संध्या को स्वप्न की भाँति गुज़ार देते हैं।

आज कुछ-कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन-छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उन्हें ज़िंदगी में क्या स्वाद नहीं मिला है? पर जी भरकर भी कुछ खाली सा रहता है।

गर्दन रामदास को लुभा रही थी। वह चिड़िया से बोला– तुम यहीं रह जाओ। चिड़िया बोली– यहाँ मेरा क्या काम! मैं तो घोंसले में रहती हूँ अपनी माँ के साथ। रामदास बोला– देखो, तुम इस बग़ीचे को अपना ही समझो। यह महल भी तुम्हारा है। चिड़िया बोली– नहीं, मुझे तो मेरी माँ के पास ही जाना है। रामदास बोला– देखो, यहाँ कितना बड़ा बग़ीचा है, महल है, सोना-चाँदी, धन-दौलत, सब है, तुम्हारे घोंसले में क्या है? तिनके का घोंसला। तिनके तुम्हें चुभ जाएँगे। चिड़िया बोली– मैं क्या जानूँ सोने को। मैं तो धूप किरणों को जानती हूँ, सूरज की गर्माहट को जानती हूँ, ठण्डी हवा और पानी को जानती हूँ, घास की नर्माहट को जानती हूँ, जो मेरे घोंसले में हैं। और मेरी माँ भी। रामदास बोला– पगली मत बनो। यहाँ सबकुछ है तुम्हारे लिए। मेरी रानियाँ, नौकर-चाकर सब तुम्हारा जी बहलाएँगे। सोने का पिंजरा बनवाऊँगा तुम्हारे लिए। चिड़िया बोली– मुझे कुछ नहीं पाना, मुझे तो मेरी माँ और मेरा घोंसला ही चाहिए। मैं तो यहाँ दो घड़ी सुस्ताने आ गई थी बस। पर रामदास के बार-बार रोकने पर अब उसे शक होने लगा और वह चौकन्नी हो गई। वह समझ गई थी रामदास उसे बातों में लगा रहा था। तभी उसने चुपके से एक बटन दबाया और एक आदमी आया। वह चिड़िया को जैसे ही पकड़ने लगा, चिड़िया फुर्र से उड़ गई। हाँफती हुई वह माँ से जा लिपटी। माँ, माँ करती रही कुछ बोल नहीं पाई। माँ ने उसे चपेटकर गले लगा लिया। माँ समझ गई थी कि बच्ची अभी किसी मुसीबत से बचकर आई है। रामदास की दौलत देखकर भी चिड़िया को कोई लालच नहीं आया।

वसंत भाग-1 से बच्चों ने 'नादान दोस्त' कहानी को पढ़ा। कक्षा 6 के कुलदीप ने उसे समूह में अपने शब्दों में कुछ इस तरह साझा किया :

केशव और श्यामा रोज़ आँखें मलते हुए चिड़िया के अण्डे देखने पहुँच जाते। उनका मन कौतूहल से भरा होता। तरह-तरह के प्रश्न उनके मन में आने लगते। चिड़िया के अण्डे देखने में कैसे होंगे, कितने बड़े होंगे, रंग कैसा होगा, बच्चे कब निकलेंगे, कितने दिन लग जाएँगे, बाहर कैसे निकलेंगे, चिड़िया उनको कैसे बड़ा करेगी, क्या अण्डा फूटते ही बच्चे उड़ जाएँगे! अण्डों को देखने की बात सोचकर ही वे न जाने कहाँ खो जाते। पता नहीं उन्हें अण्डों को देखने में क्या सुख मिलता कि दूध जलेबी भी भूल जाते। पहले स्टूल फिर उसके ऊपर और एक छोटा स्टूल रखकर अण्डों तक पहुँचने की जुगाड़ लगाई। जब बच्चे अण्डों से निकलेंगे तब कहीं उन्हें तिनके चुभ न जाएँ, यह सोचकर नीचे चीथड़े बिछाकर अण्डों को उसपर रखा। काँटे साफ़ किए। टोकरी औंधाकर छाया की। टोकरी के छेद को कपड़ा ठूँसकर बन्द किया। टोकरी को ऐसे टिकाया कि चिड़िया आराम से बाहर जा सके और धूप भी न आए। कटोरी को गिराकर श्यामा तेल फैलाने का दिखावा करती है ताकि चिड़िया के पानी के लिए कटोरी काम में ले सके। वे माँ

से आँख बचाकर मटकी से मुट्ठी भर चावल लाकर घोंसले के पास रख देते हैं। इस तरह दोनों चिड़िया के खाने-पीने की जुगाड़ करते हैं। अब दोनों सोच रहे थे कि चिड़िया की ज़रूरत की सारी चीज़ें वहाँ हैं क्या! उन्हें क्या पता था कि उनके हाथ लगाने की वजह से सबकुछ ख़त्म हो जाएगा। चिड़िया अण्डे सेएगी ही नहीं।

कहानी पर बच्चों ने अपनी बात कुछ इस तरह कही :

आकाश : हमें बिना सोचे समझे कुछ नहीं करना चाहिए।

बुल्ला : केशव और श्यामा को चिड़िया के बच्चों के बारे में सोच-सोच कर बहुत अच्छा लग रहा था कि वे उन बच्चों की देखभाल करेंगे, सेवा करेंगे, उनकी हर ज़रूरत का ख़्याल रखेंगे, साथ खेलेंगे और उन्हें गोद में उठाए फिरेंगे।

विकास : केशव और श्यामा सोच रहे थे कि अण्डों में से बच्चे निकलेंगे। हम उन्हें निकलते हुए देखेंगे, हाथ से छूकर देखेंगे, बड़ा होते हुए देखेंगे। उन्हें चिड़िया के बच्चों के साथ खेलने का बहुत ही शौक़ लग रहा था।

यामिनी : वे सोच रहे थे क्या पता अण्डे को हाथ लगाने से ही चूज़े बाहर निकल आएँ तो कैसा लगेगा। कहीं चूज़े अण्डे से निकलते ही उड़ गए तो।

भारती : अण्डे से निकलते ही कैसे उड़ सकते हैं, पंख आने में तो कई दिन लगते हैं।

मानवी : पर उन्हें क्या पता था कि अण्डों को हाथ लगाने की सज़ा इतनी बड़ी होगी।

पवन : जब वो उनके घोंसले को ठीक कर रहे थे तो वो चिड़िया के बच्चों के ख़्यालों में खो गए इसलिए उन्होंने अण्डों को हाथ लगा दिया।

विशाल : उन्होंने तो अच्छा सोचकर ही अण्डे उठाकर कपड़े पर रखे ताकि जब चूज़े निकलें तो उनको कुछ चुभ न जाए।

कुलदीप : सबकुछ अच्छा करना चाहा था, पर नादानी से उन्होंने अण्डों को छू लिया।

विशाल : नादानी मतलब बिना समझदारी के।

भारती : क्या पता चिड़िया ने देख लिया हो कि मेरे अण्डों को किसी ने छुआ है।

विकास : हाथ लगाने से हमारे हाथों की ख़ुशबू अण्डे पर रह जाती है। चिड़िया को पता चल जाता है, अण्डे को किसी ने तो छुआ है।

भारती : छिलके पड़े देखकर श्यामा को लगा चूज़े निकलकर उड़ गए।

यामिनी : पर उसने बहते हुए पानी को देखा तो पता चला अण्डे तो फूट गए। उन्होंने चिड़िया के बच्चों को लेकर कितने सपने देखे थे। लेकिन अण्डों के फूटने से सब ख़त्म हो गया।

विकास : नादानी से भी हम किसी के जीवन से खिलवाड़ नहीं करें।

कुलदीप : अनजाने में हुई भूल से भी किसी का जीवन ख़त्म हो जाता है।

मानवी : अण्डों को हाथ न लगाते तो चिड़िया उन्हें सेती, उनसे सुन्दर बच्चे निकलकर इधर-उधर घूमते।

मानवी की इस बात पर सभी के चेहरों के भाव काफ़ी अलग थे। बच्चे काफ़ी भावुक महसूस कर रहे थे। कहानी में चिड़िया के अण्डे टूटने का दुःख सभी महसूस कर पाए। कहानी पर रही चर्चा को कुछ इस तरह समेकित किया गया कि प्रकृति में कई जीव हैं, सब एक दूसरे से अलग हैं। हमें उनके बारे में ज़रूर जानना चाहिए, पर बहुत सावधानी के साथ उन्हें देखें एवं उनकी आदतों और व्यवहार को समझें। दूसरों से इनके बारे में पहले पता करें। अपने शौक़ के लिए हम किसी को नुक़सान तो नहीं पहुँचा रहे, ये ज़रूर सोचें। क्योंकि हम जान-बूझ कर तो ऐसा नहीं कर रहे, पर अनजाने में भी किसी के जीवन से खिलवाड़ नहीं करें।

जब कोई अण्डे को छू ले तो चिड़िया उसे सेती नहीं, पर जब कोई चूज़े को हाथ लगाता है तब तो चिड़िया उसे छोड़कर नहीं जाती। तो फिर अण्डे के साथ ऐसा क्यों करती है?

आकाश : क्योंकि चूज़े को सेने की ज़रूरत नहीं होती। चूज़ा तो कई बार ख़ुद भी इधर-उधर घूमता है, चिड़िया उसे घोंसले में उठाकर रख देती है।

बुल्ला : मुर्ग़ी तो अपने हाथ लगाने पर भी अण्डों को नहीं छोड़ती।

कुलदीप : नहीं, मुर्ग़ी के अण्डे देते ही कच्चे अण्डे (तुरन्त दिए हुए) को हाथ लगाने पर कोई दिक़्क़त नहीं होती। पर बाद में हाथ नहीं लगा सकते।

विकास : अगर दो मुर्ग़ियों के अण्डों को मिला दें तो क्या मुर्ग़ी अपने अण्डे पहचान लेती है?

कुलदीप : हाँ, एक मुर्ग़ी के अण्डे को कितनी भी मुर्ग़ियों के अण्डों में मिला दें, वो अपने अण्डे ढूँढ़ लेती है।

बुल्ला : पर मुर्ग़ी के पास तो दूसरी मुर्ग़ियों के अण्डे भी लाते हैं, तो भी वह उन्हें अपने अण्डों की तरह ही सेती है।

विशाल : वह कुड़क (फूलकर बड़ी) हो जाती है, और अपने नीचे सारे अण्डों को ढँक लेती है। इससे अण्डे गरम रहते हैं।

कुलदीप : जब मुर्ग़ी अण्डे देती है तो 21 दिनों तक पूरे समय उसपर बैठती है। इससे अण्डों का तापमान बढ़ जाता है, और उनसे चूज़े बन जाते हैं। 21 दिन बाद चूज़े अण्डे का खोल तोड़कर बाहर आने लगते हैं। मुर्ग़ी भी खोल तोड़ने में मदद करती है।

'खिलौनेवाला' कहानी को यामिनी ने सुनाया और खिलौनेवाला सभी का चहेता बन गया। सभी बच्चों ने इस कहानी को मज़े से पढ़ा, फिर कुछ इस तरह से चर्चा हुई :

खिलौनेवाला इतने सस्ते खिलौने क्यों बेचता था?

खिलौनों में कोई मिस्टेक होगी।

खिलौने थोड़े टूटे या पुराने होंगे।

शायद उनके रंग कच्चे होंगे।

उसे खिलौने बेचने का मन करता होगा।

थोक में लाया होगा।

फ़ैक्टरी से सस्ते ख़रीद लिए होंगे।

उसने अपना फ़ायदा पहले ही कम लिया होगा।

उसने एक साथ मिट्टी के खिलौने बनवाए होंगे।

शुरू में कम भाव में बेचे होंगे ताकि लोगों के साथ रिश्ता बन जाए।

शुरुआत में कम दाम में बेचकर ज़्यादा ग्राहक बनाने की कोशिश कर रहा होगा।

उसने खिलौने, मुरली, मिठाई, ऐसी चीज़ें बेचने का काम ही क्यों चुना होगा?

उसे दूसरा काम करना नहीं आता होगा।

उसे खिलौने अच्छे लगते होंगे।

उसे बच्चे अच्छे लगते होंगे।

वह चाहता होगा ऐसी चीज़ बेचूँ जो जल्दी से बिक जाए, बच्चे तो हर घर में होते हैं।

पूरी कहानी पढ़ने के बाद खिलौनेवाले के बारे में बच्चों की राय :

वह बच्चों के साथ समय बिताना चाहता होगा।

उसे बच्चे अच्छे लगते होंगे।

वह छोटे बच्चों से बहुत प्यार करता होगा।

उसे बच्चों से मिलना, उन्हें देखना अच्छा

लगता होगा।

वह सब बच्चों को ख़ुश करना चाहता होगा।

उसे बच्चों को ख़ुशी देकर अच्छा लगता होगा।

वह चाहता होगा सब बच्चों को थोड़ी-सी ख़ुशी दे सके।

ग़रीब बच्चों को भी खिलौने मिल सकें जिनके पास पैसे नहीं होते।

वह उन बच्चों को भी मुस्कुराते देखना चाहता था जो ख़ुद कभी खिलौने नहीं ले सके।

उसे उनके मनपसन्द खिलौने देकर उनकी इच्छा पूरी करने में ख़ुशी मिलती होगी।

उसे बच्चों से बहुत ही लगाव होगा।

उसे बच्चों को देखकर सुकून मिलता होगा।

वह उन बच्चों के साथ समय बिताना चाहता होगा।

वह उन बच्चों का साथ पाना चाहता होगा।

वह दूसरे बच्चों को देखकर अपने बच्चों की कमी पूरा करना चाहता होगा।

उसे दूसरे बच्चों में अपने बच्चों की झलक दिखाई देती होगी।

5वीं कक्षा के आकाश ने उपरोक्त प्रश्न पर अपनी समझ को कुछ ऐसे समेकित किया– "उस व्यक्ति के पास सबकुछ था, वह अपने परिवार के साथ बहुत प्रसन्न था। पर कुछ ऐसा हुआ होगा, कोई ऐसी घटना जिसमें उसका पूरा परिवार ख़त्म हो गया। फिर अगर वह उसी घर में रहता तो अकेलेपन से वह घुटता रहता, उसे हमेशा अपने बच्चों की याद सताती रहती। इसलिए उसने गलियों में घूम-घूम कर ऐसे सामान बेचने का काम शुरू किया जिससे वह बच्चों से मिल सके। वह इतनी मधुर आवाज़ में बुलाता था कि बच्चे उसकी आवाज़ सुनकर सबकुछ भूल जाते थे और खिंचे चले आते। भगदड़ में किसी की चप्पल छूट जाती, किसी की टोपी गिर जाती, किसी का पजामा सरक जाता, पर बच्चे परवाह नहीं करते कि क्या हो रहा है। बच्चे जाकर उसे घेर लेते। उसे भी बच्चों को खिलौने दिखाने में मज़ा आता। वह चाहता था कि हर बच्चे को उसका मनपसन्द खिलौना मिल जाए। वह किसी भी बच्चे पर चिल्लाता नहीं था। वरना लोग तो बच्चों को दुत्कार कर भगा देते हैं। पर वो खिलौनेवाला तो बच्चों के चेहरे देखता रहता था। वह तो यह भी ध्यान रखता था कि सबको खिलौना मिल गया या नहीं। उसने उस बच्चे को भी खिलौना दिया था जिसके पास पैसे नहीं थे। शायद उसे अलग-अलग बच्चों से मिलकर ही चैन आता था, तभी तो वह जिस गाँव में खिलौने बेचकर गया, दोबारा उसमें 6 महीने बाद आया मुरलीवाला बनकर, फिर तीसरी बार आया मिठाईवाला बनाकर।

किसान राजकुमारी : बच्चों को ऑडियो के साथ एक भील कथा 'किसान राजकुमारी' सुनाई गई। इसमें राजा अपनी बेटी को उसकी किसान बनने की इच्छा के चलते महल से बेदख़ल कर देता है। राजकुमारी कुछ नए दोस्तों की मदद से अपने प्रयास जारी रखती है। अलग-अलग आपदाओं का सामना समझदारी भरे निर्णयों के साथ कर पाती है। कहानी को सुनने के बाद तय योजना अनुसार बच्चे अपने मन में आने वाले प्रश्नों और विचारों को समूह में रखते गए तो अन्य बच्चे तुरन्त अपनी प्रतिक्रियाओं के साथ तैयार रहे और समझ को साझा करते रहे। चर्चा के कुछ अंशों को साझा करने की कोशिश कर रही हूँ...

इस कहानी में हमारे जीवन के लिए क्या सीख है?

योगिता : हमें मदद करनी चाहिए।

आकाश : हाँ, पर ज़रूरी नहीं है हमेशा पैसे से ही। दूसरी तरह से भी जैसे– अनाज से,

मेहनत से, मिल-जुल कर काम करने से।

कुलदीप : बिना सोचे समझे कुछ भी न करें।

विकास : किसी पर अत्याचार नहीं करें।

बुल्ला : परिस्थितियों से घबराएँ नहीं, सही निर्णय लेना सीखें।

यामिनी : दोस्त बनाने चाहिए जैसे राजकुमारी ने बनाए। दोस्त मदद करते हैं।

विशाल : राजकुमारी डरी नहीं।

आकाश : हम महल में रहें या झोपड़ी में इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? राजकुमारी ने झोपड़ी में रहकर भी ख़ूब अनाज उगाया जो गाँव के सारे लोगों के काम आया।

विशाल : राजा तो बस अपनी बेटी को नीचा दिखाने की कोशिश करता रहा। ऐसे राजा के होने से क्या फ़ायदा।

राजा ने अपनी बेटी को महल से क्यों निकला होगा? क्या आप बेटी के व्यवहार से असहमत हैं?

राजकुमारी अगर वास्तव में किसान बनना चाहती थी, तो इसमें राजा को क्या दिक़्क़त लगी होगी?

विकास : राजा नहीं चाहता था कि बेटी किसान बने।

विशाल : बेटी किसान बनने की ज़िद कर रही थी।

योगिता : राजा चाहता था बेटी उसकी बात माने क्योंकि मैं इसका पापा हूँ?

भारती : बेटी राजा की बात नहीं सुन रही थी।

विशाल : ज़िद करना सही है क्या?

बुल्ला : बुरी बात है।

विकास : अगर बात सही हो तो ज़िद कर सकते हैं। इसपर समूह में सभी सहमत हुए।

कुलदीप : राजा को लगा बेटी किसान कैसे बन सकती है।

आकाश : हाँ, राजा को लगा होगा यह तो छोटा काम है।

बुल्ला : हाँ, इससे राजा की नाक कट जाती न।

विशाल : हाँ, राजा ने सोचा होगा यह तो राजकुमारी है, मेरी बेटी को किसान बनने की क्या ज़रूरत है?

यामिनी : राजकुमारी तो महलों में रहती है, वह तो बहुत नाज़ुक होती है।

बुल्ला : किसान तो ग़रीब लोग होते हैं, जिनके पास कुछ और करने को नहीं होता। पढ़े-लिखे तो कभी किसान नहीं बनते।

कुलदीप : लेकिन सबको अनाज तो किसान की मेहनत से ही मिलता है न।

विशाल : सारे किसान खेती करना बन्द कर दें तो।

बुल्ला : ग़रीब-अमीर सब भूखे रहेंगे।

आकाश : तो फिर किसान छोटे कैसे हुए?

विकास : अगर पढ़-लिख कर खेती का काम करें तो और अच्छे-से कर पाएँगे। ज़्यादा अनाज हो पाएगा।

क्या लड़कियाँ भी किसान बन सकती हैं?

बुल्ला और यामिनी को छोड़कर सभी बच्चे इस बात पर सहमति जताते हैं!

यामिनी : पता नहीं, पर कभी किसी को देखा नहीं।

बुल्ला : नहीं, क्योंकि इसमें बहुत मेहनत होती है।

विशाल : जिनके पति मर जाते हैं वे औरतें ख़ुद ही अपना पूरा घर और काम सँभालती हैं और खेती-बाड़ी भी करती हैं।

आकाश : घर में भी तो औरतें सारे काम करती हैं, तो क्यों नहीं बन सकतीं लड़कियाँ किसान?

विकास : हमारी मम्मी भी तो पापा के साथ सारे काम करती हैं, मण्डी से सब्ज़ियाँ लेकर आती हैं, दुकान जमाती हैं, पापा सब्ज़ियाँ छाँटते रहते हैं। मम्मी खटाखट सब्ज़ियाँ बेच देती हैं। दिनभर पापा के साथ रहती हैं।

विशाल : मेरी मम्मी भी तो हमेशा पापा के साथ काम पर जाती हैं। जितना पापा करते हैं, मम्मी भी करती हैं।

योगिता : मेरे पापा पढ़ाते हैं, मम्मी दुकान चलाती हैं।

कुलदीप : दीदी, एक फ़िल्म थी– *आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपइया।* उसमें भी औरतें काम करती हैं और पैसे कमाती हैं। पर मर्द लोग कहते हैं ये तो औरत की कमाई है, इससे घर नहीं चलेगा।

विशाल, आकाश, विकास बोल पड़ते हैं, सबका पैसा एक ही होता है। हमारे मम्मी-पापा तो ऐसा नहीं कहते। हम तो सारा पैसा काम में लेते हैं।

बुल्ला : खेतों में बाड़ लगाने का काम ही कितना मुश्किल है। औरतों को बाज़ार से सामान ख़रीदकर लाने में कितनी शर्म आती है। औरतें अकेले नहीं कर सकतीं।

कुलदीप : अकेले तो आदमी भी नहीं कर सकते, वो भी तो दूसरों की मदद लेते हैं। जब औजार बनाते हैं तो औरतें ही 5 किलो का घन उठाकर घण्टों पीटती हैं, आदमी तो पकड़े बैठे रहते हैं। मेहनत तो घन पीटने में ज़्यादा होती है।

बुल्ला : बिजली के खम्भों पर चढ़ते देखा है कभी लड़कियों को? वे कभी लाइट ठीक करने क्यों नहीं जातीं?

आकाश, यामिनी : अगर उनको सिखा देंगे तो वो भी जा सकती हैं।

बुल्ला : लड़के खाना बना सकते हैं क्या?

विशाल : हाँ, मैं तो बनाता हूँ, और मेरे पापा भी। मेरी मम्मी तो कोटा गई हैं। आज ही मेरे पापा ने मुझे आलू के पराठे बनाकर खिलाए।

योगिता : जब मेरी मम्मी की तबियत ख़राब होती है तो पापा सबके लिए खाना बनाते हैं। मैं और दीदी मदद करते हैं।

कुलदीप : मेरा मामा जब मास्टर बनने गया था, तो ख़ुद ही अपने लिए सबकुछ करता था।

भारती : मेरे पापा साग बनाते हैं और मम्मी रोटी बना देती हैं। कभी-कभी मैं और मेरा भाई भी मिलकर खाना बनाते हैं।

बुल्ला : मुझे और मेरे पापा को कुछ भी बनाना नहीं आता। पर मैं भी कभी-कभी बकरी चराने चला जाता हूँ, क्योंकि यह मेरी बहन का ही काम नहीं है।

एक शिक्षक की नज़र से : इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों के अलग उम्र व भिन्न कक्षा स्तर पर होने की चुनौती बाद में सन्दर्भ के रूप में एक विकल्प बनती नज़र आई। बच्चों की सहमति होने से उनकी भागीदारी सुनिश्चित होने में मदद मिली। बातचीत की प्रक्रिया में बड़ों ने अपने छोटे साथियों को प्राथमिकता के साथ उनकी राय को महत्त्व देने की ज़रूरत को समझा। साथ ही यह भी कि अपनी राय को सबके अनुरूप बनाकर कैसे रखा जाए कि उनका छोटा साथी भी उसका हिस्सा बन सके। कभी-कभी समूह के सबसे छोटे साथी का विचार भी चर्चा का मुद्दा बनता रहा। इससे बच्चे ये अनुभव कर पाए कि सभी की बात उतनी ही ज़रूरी है जितनी उनकी अपनी। यह प्रक्रिया एक दूसरे को देखकर, उत्साहित होकर स्वयं

की ओर से अपने लिए काम चुनने की पहल और मिलकर काम करने का एक ज़रिया बनी। इस प्रक्रिया में एक दूसरे के अनुभव अच्छी चर्चा के साथ नए नज़रिए से सोच विचार का माध्यम बने। 'नदी और पेड़' की कहानी के ज़रिए बच्चे समाज में श्रम के स्तरीकरण से जुड़ी रूढ़िवादी मान्यताओं पर प्रश्न उठाते नज़र आते हैं। इस कहानी के ज़रिए बच्चों ने एक दूसरे के नज़रिए से मदद लेते हुए काफ़ी अच्छे-से प्रकृति में सामंजस्य और सद्भाव को अनुभव करने की कोशिश भी की, जो मानवीय समाज, जीवन में सार्थकता और मिठास भरे जाने की दिशा में एक जायज़ माँग है।

ऑडियो व विविध पुस्तकों के ज़रिए बच्चों के बीच भाषा की बानगी को महसूस कर पाने का एक मौक़ा बन पाता है। 'किसान राजकुमारी' कहानी को लेकर मेरे मन में इतनी सटीक भूमिका नहीं थी, पर कहानी पर उठाए सवालों के चलते मुझे लगा कि बच्चों के अनुभवों में विविधता ने संवाद को कई रोचक मोड़ दिए। इस कहानी के ज़रिए जितना सोचा था, चर्चा उससे कहीं आगे तक जा पाई। बच्चों ने कहानी के साथ चलते-चलते समाज में बात मानने को लेकर छोटों पर दबाव और बड़ों के रौब, उचित-अनुचित व्यवहार के मायने, समाज में श्रम को लेकर रहे स्तरीकरण, जेंडर के कारण लड़कियों के प्रति मान्यताएँ, और सीखने के मौक़ों की ज़रूरत आदि कई पहलुओं की पड़ताल करने की कोशिश की। अन्ततः समूह में सभी ने यह देखने की कोशिश की कि सभी लोग सब काम मिल-जुल कर करते हैं, तो काम भी बिना परेशानी के अच्छे-से हो पाते हैं, और सीखने का मौक़ा दिया जाए तो कोई भी कुछ भी सीख सकता है। कहानी से उठे सवाल कब जीवन के असल सवालों में बदल गए, इसका पता ही नहीं चला। बच्चों के ख़ुद के अनुभवों ने इस चर्चा को काफ़ी जीवन्त बना दिया। अनुभवों में भिन्नता नया नज़रिया बनाने में मददगार साबित हुई। चर्चा के दौरान बच्चों के आपसी मतभेद उभरकर सामने आए लेकिन बच्चों ने व्यक्ति के बजाय विचार के पक्ष में खड़े हो पाने का प्रयास किया। आज के दौर में यह काफ़ी प्रासंगिक प्रतीत होता है, क्योंकि लोगों में सहिष्णुता ख़त्म होती जा रही है। चर्चा के ज़रिए कहानियों के नए आयाम खुल पाए और भाषा के ज़रिए सामाजिक सरोकारों के, जहाँ का हिस्सा बच्चे बने।

भाषा वैज्ञानिकों का मानना है, अच्छे साहित्य का एक्सपोज़र और उसपर खुला विमर्श बच्चों में तार्किक चिन्तन को प्रोत्साहित करने के साथ उनकी मानवीय संवेदनाओं को सहज आकार देता है। भारती और यामिनी के अनुभव में यह स्पष्ट रूप से झलकता है। किताबों से जुड़े अनुभवों को बच्चे अपने व्यवहारिक अनुभवों से जोड़ने का एक सार्थक प्रयास करते नज़र आए। अपने विचारों के माध्यम से अर्चना, आकाश, बुल्ला, यामिनी, मानवी आदि बच्चे किताबों व आसपास की दुनिया के बीच रिश्ते बनाने की कोशिश करते नज़र आते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे किताबी भाषा के ज़रिए जीवन की जटिलता को समझने और उसमें जीवन्तता ढूँढ़ने की कोशिश करते रहे। कहानियों में छुपे मर्म को समझने की दिशा में आपसी संवाद ने सार्थक भूमिका अदा की। बँधे-बँधाए कक्षाई ढाँचे से बाहर बच्चों के साथ रहे ये अनुभव उनके सीखने के प्रति लगाव और ओनरशिप को लेकर हमारी मान्यताओं को चुनौती देते नज़र आते हैं। बच्चों का काम से जुड़ाव और भागीदारी मुझे ऊर्जा देने वाली रही।

Link- किसान राजकुमारी : https://youtu.be/5U1s3X59jLE | नदी और पहाड़ : https://youtu.be/Uxud7zNC_Og

अलका तिवारी ने शिक्षा में अपने काम की शुरुआत ज़िला बारां राजस्थान में दिगंतर संस्था द्वारा चलाए जा रहे सहरिया समुदाय के बच्चों से जुड़े सन्दर्भशाला प्रोजेक्ट में की। फिर उन्होंने बोध शिक्षा समिति में विज्ञान शिक्षक के रूप में कार्य किया। वे 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में विज्ञान के टीचर एजुकेटर के रूप में जुड़ी हैं। अलका 2019 से फ़ाउण्डेशन के टोंक स्कूल में विज्ञान और भाषा के शिक्षक के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्हें शुरुआती कक्षाओं के बच्चों के साथ काम करना अच्छा लगता है।
सम्पर्क : alka.tiwari@azimpremjifoundation.org